Reading comprehension

(पठन की आवश्यकता)

पठन :- पठन ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक सीखकर ही प्राप्त करता है।

पठन कौशल :- क्रमबद्ध एवं विधिपूर्वक बालक को पढ़ने का अभ्यास कराना पठन कौशल ~~करते हैं~~ कहलाता है।

डिसेन्ट के अनुसार :- पठन लेखक द्वारा उद्दिष्ट सुलिखित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको संबंधित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।

इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में पठन सीखने का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इससे छात्रों को लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सरलता होती है और अर्थग्रहण की योग्यता विकसित होती है। अर्थ को समझने की योग्यता के बिना लिखित अथवा मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर समझ पाना सम्भव नहीं है।

पठन के प्रकार (Kinds of Reading)

क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार है।

C-4 Language across the curriculum

(1) मौखिक पठन

(ii) मौन पठन :—

(1) मौखिक पठन :— जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए स्वरात्मक उच्चारण कर के पढ़ा जाता है उसे मौखिक पठन कहते हैं इसे सस्वर पठन भी कहा जाता है।

मौखिक पठन का महत्व :—

भाषा शिक्षण में प्रारंभिक स्तर पर मौखिक पठन का विशेष महत्व है।

(1) इससे भाषा पढ़ने में बालकों की झिझक, लज्जा एवं हिचकिचाहट का निराकरण होता है।

(2) छात्रों का शब्दोच्चारण शुद्ध होता है।

(3) मौखिक पठन से अक्षर विन्यास शुद्ध तथा शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।

(3) इसमें बालकों की ज्ञानेन्द्रियाँ, ध्वनि यंत्र एवं मस्तिष्क प्रशिक्षित होते हैं।

(5) इसमें बालकों का मानसिक विकास

एवं भाषण कला में निपुण हैं।
~~जाते हैं~~ । जाता है।

(5) मौखिक पठन के अभ्यास से छात्र धारा प्रवाह किसी पाठ्य-वस्तु को प्रस्तुत कर सकता है।

(6) इसके अभ्यास से बालक एक अच्छा वक्ता बन सकता है।

(7) प्राथमिक कक्षाओं में मौखिक पठन का सर्वाधिक महत्व है।
(8) मौखिक पठन के अभ्यास से छात्रों में आत्मविश्वास का विकास होता है।
(9) इसके अभ्यास से बालक अपने विचार को सही प्रकार से प्रकट करता है।

(10) इसके अभ्यास से छात्रों ~~सरल~~ में निर्भीकता का विकास होता है।

objectives of oral Reading
मौखिक पठन के उद्देश्य :-

मौखिक पठन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

(1) छात्रों को ~~शुद्ध~~ शुद्ध ~~उच्चारण~~ उच्चारण करने

के योग्य बनाना।

(2) छात्रों को उचित स्वर, गति और लय से पठन की योग्यता प्रदान करना।

(3) छात्रों को ध्वनियों के उचित आरोह-अवरोह आदि चिन्हों को ध्यान में रखकर पठन में निपुण बनाना।

(4) छात्रों में मौखिक पठन द्वारा आत्म-विश्वास एवं आत्मनिर्भरता विकसित करना।

(5) छात्रों को मौखिक पठन द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता में निपुण बनाना।

कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन के प्रकार:-

कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन के तीन प्रकार होते हैं।

(1) आदर्श पठन

(2) अनुपठन

(3) अनुकरण पठन

(1) आदर्श पठन :- मौखिक पठन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अध्यापक आदर्श पाठ छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है उसे आदर्श पठन कहते हैं। eg- अध्या...

गद्य एवं पद्य में आदर्श पाठ

(२) अनु पठन :-

पठन का अभ्यास कराने के लिए छात्रों को मौखिक रूप से जो पढ़ाया जाता है उसे अनुपठन कहते हैं। प्राथमिक स्तर पर छात्र हिन्दी को मौखिक रूप से पढ़ने में कठिनाई अनुभव करता है, जिसे अनुपठन द्वारा दूर ~~किया~~ किया जाता है।

(३) अनुकरण पठन :-

छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से आदर्श ~~पठन~~ का पाठ का अनुकरण करके किये गये पठन को अनुकरण पठन कहते हैं। हिन्दी कविता-शिक्षण में अनुकरण पाठ कराते हैं।

मौखिक पठन के दोष :-

महर्षि ~~याज्ञवल्क्य~~ याज्ञवल्क्य ने मौखिक पठन के 14 दोषों का उल्लेख किया है।

महर्षि पाणिनि ने मौखिक पठन के छः दोषों का उल्लेख किया है।

(1) डा - डायर पढ़ने वाला

(2) अधिक शीघ्रता से पढ़ने वाला
(3) पढ़ते पढ़ते समय सिर हिलाने वाला।
(4) चुपचाप पढ़ने वाला
(5) अर्थ को समझे बिना पढ़ने वाला।
(6) ऊँचे स्वर में पढ़ने वाला।

Elements of Oral Reading

मौखिक पठन के प्रमुख तत्व :—

मौखिक पठन के निम्नलिखित तत्व हैं

(1) उचित आसन एवं मुद्रा :—

मौखिक पठन के लिए उचित आसन एवं मुद्रा होना आवश्यक है यदि बैठकर पढ़ना हो, तो कुर्सी पर सीधा बैठना चाहिए ताकि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और पैर 90 का कोण बनाते हुए लटके रहे।

खड़े होकर पढ़ने में बिल्कुल सीधा खड़ा होना चाहिए। पुस्तक को बाये हाथ से पकड़ना चाहिए पकड़कर कोण बनाते हुए आँखों से। दूर की दूरी